SJIF 2014 = 3.189
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का लिंग एवं क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन

सन्दीप कुमार श्रीवास[1] & डॉ0 अरुण कुमार[2]

[1]शोध छात्र, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)

[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है जिनमें 25 शहरी व 25 ग्रामीण छात्र है एवं 25 शहरी व 25 ग्रामीण छात्रायें है। विद्यार्थियों की पारिवारिक पर्यावरण ज्ञात करने हेतु डॉ0 वीना शाह (1990) द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण फैमिली क्लाईमेट स्केल (FES) का प्रयोग किया गया है व प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण MS office excel की मदद से किया गया है जिसमें मध्यमान, विचलन, व टी–मान की गणना की गयी है। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर छात्र तथा छात्राओं के प्रति उनके पारिवार का व्यवहार समान रूप से प्रभावित नहीं करता है, परिवार के सदस्य छात्राओं की तुलना में छात्रों के प्रति अधिक सकारात्मक व्यवहार रखते है। शहरी छात्रों के परिवार के सदस्य ग्रामीण छात्रों के परिवार के सदस्यों से अधिक सकारात्मक एवं सहयोगात्मक व्यवहार करते है तथा शहरी एवं ग्रामीण परिवारों में छात्राओं के प्रति व्यवहार समान है।

***Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at www.srjis.com**

प्रस्तावना :–

परिवार मानव समाज की प्राचीनतम् आधारभूत इकाई है जिसमें कई व्यक्ति एक साथ रहते है। यह सब एक दूसरे से माता–पिता, भाई–बहिन, पुत्र–पुत्री, दादा–दादी, चाचा–चाची अथवा किसी अन्य सम्बंध से सम्बन्धित होते है। ये सभी सम्बन्ध आपस में जुडे होते है, इनके रहन–सहन, विचार, आचरण, संस्कृति आदि से परिवार बनता है, जिसे पारिवारिक पर्यावरण कहते है।

परिवार में माता–पिता इस प्रकार का पर्यावरण बनाते है व बनायें रखते है जो उनके बालकों के विकास में सहायक हो व उनके बालकों का सर्वांगीण व संतुलित विकास कर सके। विद्यालय में प्रवेश के पूर्व बालकों को परिवार की छत्र–छाया में ही शिक्षा प्राप्त होती है, इस प्रकार परिवार अनियंत्रित अथवा सक्रिय शिक्षा का साधन है। परिवार बच्चे की सबसे पहली संस्था है जहॉ से वह अपने जीवन की यात्रा आरम्भ करता है और यहीं सें उसकी शिक्षा का आरम्भ होता है। हर परिवार की अपनी पर्यावरण स्थिति, वंशानुक्रम स्थिति, सामाजिक स्थिति, भावात्मक स्थिति, आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, संगठनात्मक स्थिति आदि होती है, परिवार की यें स्थितियॉ बालक के शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, बौद्धिक विकास, शैक्षिक विकास आदि मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। बालक जैसे–जैसे बडा होता है वैसे–वैसे परिवार द्वारा उसमें सभी मानवीय गुणों का विकास होता है, जिसकी आवश्यकता उसे आगे चलकर एक सुयोग्य एवं सच्चरित्र नागरिक के रुप में पडती है।

जन्म के बाद प्रत्येक बालक को एक पारिवारिक परिवंश प्राप्त होता है, यही से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है, तथा परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहॉ जाता है और पारिवारिक वातावरण को बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला। बालक के जन्म लेते ही उस परिवार का प्रभाव पड़ने लगता है। बालक परिवार के व्यवहार, आचार–विचार, नैतिकता, आदि अपने परिवार की मान्यताओं को अनुसार निर्मित एवं विकसित करता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना हैं, परन्तु इसमें परिवार के वातावरण की भूमिका को अन्देखी नही की जा सकती है, परिवार ही बालक को शिक्षित करने का कार्य करता है और यहीं से उसको शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक, संवेगात्मक, समाजिक विकास के साथ – साथ उसके व्यक्तित्व को निर्माण होना प्रराम्भ होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

प्रतिस्पर्धा के इस युग में परिवार अपने बच्चों को सबसे आगे देखना चाहते हैं। इस युग में विद्यार्थियों के लिये अपनी राहें तय करना आसान नही हैं। बालक जिस प्रकार के पारिवारिक वातावरण में रहता है उसका प्रभाव उस पर पड़ता है, जिस परिवार में मैत्रीपूर्ण एवं सोहार्दपूर्ण वातावरण होता है, वहॉ बालक का समुचित विकास होता है। इसके विपरीत जिस परिवार का वातावरण सोहार्दपूर्ण नही होता है वहॉ बालकों का समुचित विकास नही हो पाता है, और वहॉ बालकों के अनेक चरों जैसे – प्रेरणा, स्वाभाव, बुद्वि, शैक्षिक रूचि, शैक्षिक उपलब्धि, संवेग, मानसिक स्वास्थय, सामाजिक दक्षता, जीवन मूल्य, जीवन शैली, स्वपोषण, शैक्षिक महत्वकांक्षायें, समायोजन, सीखना, सामाजिक परिपक्वता, सामाजिक रोशन, कुण्ठा, चिन्ता, व्यक्तित्व इत्यादि को प्रभावित करतें है, जोकि बालकों में सर्वांगीण विकास से संबध रखते है। पारिवारिक वातावरण से सम्बन्धित लिंग एवं क्षेत्र के संदर्भ में किये गये शोध अध्ययन में शिवाने, दिलीप (2011) ने अपने अध्ययन जनजातीय एवं शहरी विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण घटक में अन्तर पाया। सत्यभामा, बी0 एवं अन्य (2014) ने पारिवारिक पर्यावरण व कुशलक्षेम (well being) के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया। कौर, मलखीत एवं अन्य (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी एवं

ग्रामीण किशोरों व शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है परन्तु ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर है। परधासारधी, कैप्टन बी0 एवं गोयल शर्मा (2015) ने पारिवारिक पर्यावरण के संदर्भ में किशोर छात्रों–छात्राओं के मध्य अन्तर पाया। सिंह, लाल एवं मंगल, अंशु (2016) ने भी अपनी पुस्तक में बच्चों की सफलता एवं असफलता के लिए पारिवारिक पर्यावरण को एक मुख्य कारण माना है। अतः शोधकर्ता को विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन की आवश्यकता प्रतीत हुई है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके।

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का अध्ययन तुलनात्मक करना।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण का अध्ययन तुलनात्मक करना।
5. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन :–

- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के जनपद जालौन की कालपी तहसील तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर की कक्षा 9 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध कार्य की विधि :–

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

समष्टि :–

इस अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के जनपद जालौन के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श चयन विधि एवं प्रतिदर्श :–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिये शोधकर्ता द्वारा स्तरीकृत यादृच्छीकृत प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के लिये 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण विद्यालय का चयन किया गया है तथा विद्यालयों के चयन के बाद स्तरीकृत यादृच्छीकृत प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग प्रत्येक कर 10 विद्यालय से 5 छात्र व 5 छात्राओं का चयन कर कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। चयनित प्रतिदर्श को तालिका–1 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका–1 प्रतिदर्श का वितरण

विद्यालय क्र0सं0	शहरी		ग्रामीण	
	छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
1	5	5	5	5
2	5	5	5	5
3	5	5	5	5
4	5	5	5	5
5	5	5	5	5
योग	25	25	25	25
योग	50		50	

शोध उपकरण :–

पारिवारिक पर्यावरण को जानने के लिए वीना शाह (1990) द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण – **" फैमिली क्लाईमेट स्केल (FES) "** का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण में प्रर्युक्त तकनीक :–

उपकरण से प्राप्त प्राप्तांकों या आँकड़ों को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित कर उनका सांख्यिकीय विश्लेषण MS office excel की मदद से किया गया है जिसमें मध्यमान, विचलन, व क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी है तथा दण्डआरेख के आधार पर आँकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

उपकरणों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण कर परिणामों की व्याख्या परिकल्पनाओं के क्रम में निम्नलिखित है–

1- Ho_1 : **माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।** उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन **'t'** परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–02 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका–02 छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर मध्यमान, विचलन, तथा 't' मान

	मध्यमान	विचलन	't' मान	.05 सार्थकता स्तर, df = 98 पर परिणाम
छात्र (50)	130.62	94.97		
छात्रायें (50)	122.24	106.51	4.17	सार्थक

दण्डआरेख संख्या–01

छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमानों का दण्डआरेख

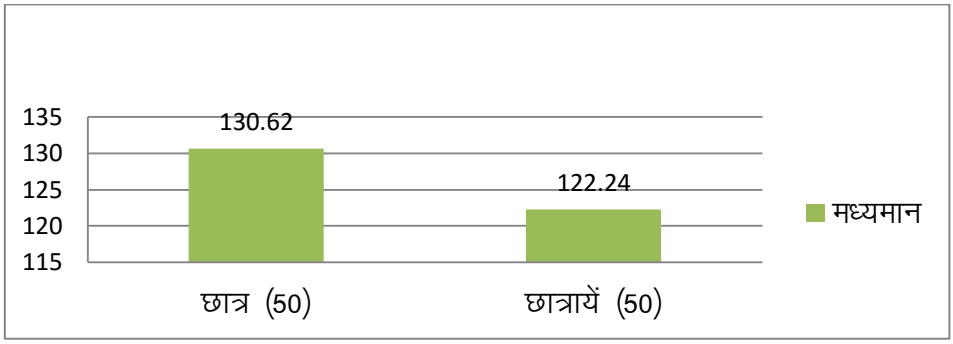

प्रदत्तों का विश्लेषण :– तालिका संख्या–02 में पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर प्राप्त 50 छात्र एवं 50 छात्राओं के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 130.62 व 122.24 है, विचलन क्रमशः 94.97 व 106.51 तथा ''टी'' का मान स्वतंत्रता स्तर 98 पर 4.17 है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– प्रतिपादित परिकल्पना–1 को अस्वीकार किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है अर्थात छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में अन्तर व्याप्त है।

परिणाम की परिचर्चा :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि छात्रों का पारिवारिक पर्यावरण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण की तुलना में अच्छा है। इसके मुख्य कारण पारिवार के सदस्यों का, छात्रों के प्रति ध्यान देना, उनसे लगाव रखना, उनसे मित्रता पूर्वक व्यवहार करना, उन्हें स्वतन्त्रता प्रदान करना, उन पर विश्वास करना, उनसे खुल कर विचारों को साझा करना व छात्राओं के इत्यादि प्रति ध्यान न देना, उनसे लगाव न रखना, उनसे मित्रता पूर्वक व्यवहार न करना, उन्हें स्वतन्त्रता प्रदान न करना, उन पर विश्वास न करना, उनसे खुल कर विचारों को साझा न करना इत्यादि रहें हैं।

2- Ho_2 : **माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन **'t'** परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–03 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका–03 ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर मध्यमान, विचलन, तथा 't' मान

	मध्यमान	विचलन	't' मान	.05 सार्थकता स्तर, df= 48 पर परिणाम
ग्रामीणछात्र (25)	127.72	96.79		
ग्रामीण छात्रायें (25)	120.36	78.15	2.78	सार्थक

दण्डआरेख संख्या–02

ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमानों दण्डआरेख

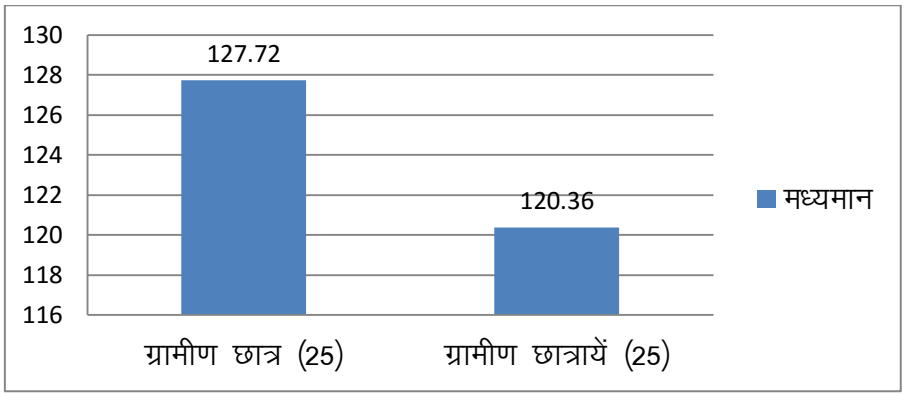

प्रदत्तों का विश्लेषण :– तालिका संख्या–03 में पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर प्राप्त 25 ग्रामीण छात्रों एवं 25 ग्रामीण छात्राओं के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 127.72 व 120.36 है, विचलन क्रमशः 96.79 व 78.15 तथा ''टी'' का मान स्वतंत्रता स्तर 48 पर 2.78 है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– प्रतिपादित परिकल्पना–2 को अस्वीकार किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है अर्थात ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में अन्तर व्याप्त है।

परिणाम की परिचर्चा :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि ग्रामीण छात्रों का पारिवारिक पर्यावरण ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण की तुलना में अच्छा है। इसके मुख्य कारण पारिवार के सदस्यों का छात्राओं की अपेक्षा छात्रों के प्रति ध्यान देना, उनसे लगाव रखना, उन्हें स्वतन्त्रता प्रदान करना, उनसे आशा रखना, उन्हें सामाजिक कार्यों के लिये प्रोत्साहित करना, छात्र– छात्राओं में भेदभाव करना, छात्रों को छात्राओं की अपेक्षा अधिक सुविधायें प्रदान करना इत्यादि रहें हैं।

3- Ho_2 : **माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन **'t'** परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–04 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका–04 शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर मध्यमान, विचलन, तथा 't' मान

	मध्यमान	विचलन	't' मान	.05 सार्थकता स्तर, **df = 48** पर परिणाम
शहरी छात्र (25)	133.52	79.59	3.23	सार्थक
शहरी छात्रायें (25)	124.12	131.94		

दण्डआरेख संख्या–03

शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमानों का दण्डआरेख

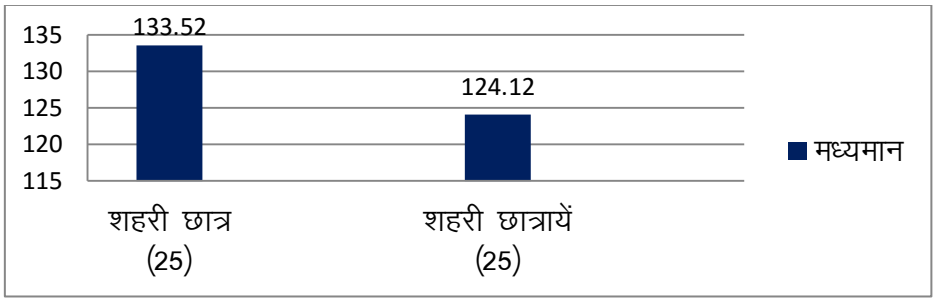

प्रदत्तों का विश्लेषण :– तालिका संख्या–04 में पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर प्राप्त 25 शहरी छात्रों एवं 25 शहरी छात्राओं के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 133.52 व 124.12 है, विचलन क्रमशः 79.59 व 131.94 तथा ''टी'' का मान स्वतंत्रता स्तर 48 पर 3.23 है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– प्रतिपादित परिकल्पना–3 को अस्वीकार किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है अर्थात शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में अन्तर व्याप्त है।

परिणाम की परिचर्चा :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि शहरी छात्रों का पारिवारिक पर्यावरण शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण की तुलना में अच्छा है। इसके मुख्य कारण पारिवार के सदस्यों का छात्राओं की अपेक्षा छात्रों के प्रति ध्यान देना, उनसे लगाव रखना, उन्हें स्वतन्त्रता प्रदान करना, उनसे आशा रखना, उनकी रूचियों को गति प्रदान करना, उनसे खुल कर विचारों को साझा करना व छात्र– छात्राओं में भेदभाव करना, छात्रों को छात्राओं की अपेक्षा अधिक सुविधायें प्रदान करना इत्यादि रहें हैं।

4- Ho_4 : **माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण का अध्ययन तुलनात्मक करना।**

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन **'t'** परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–05 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका–05 शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर मध्यमान, विचलन, तथा 't' मान

	मध्यमान	विचलन	't' मान	.05 सार्थकता स्तर, **df = 48** पर परिणाम
शहरी छात्र (25)	133.52	79.59	2.18	सार्थक
ग्रामीण छात्रों (25)	127.72	96.79		

दण्डआरेख संख्या–04

शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमानों का दण्डआरेख

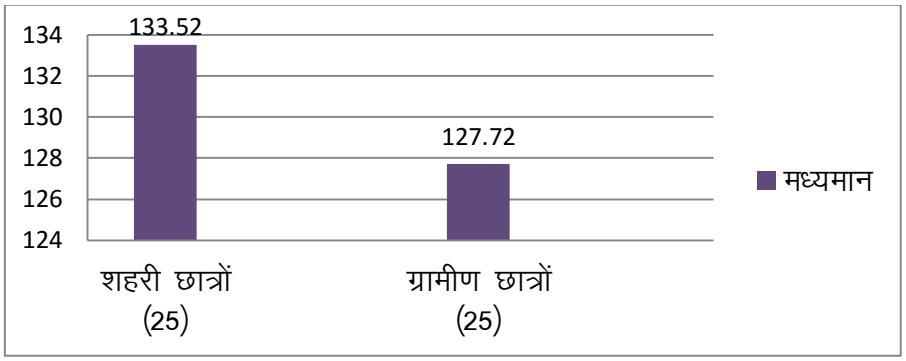

प्रदत्तों का विश्लेषण :– तालिका संख्या–05 में पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर प्राप्त 25 शहरी छात्रों एवं 25 ग्रामीण छात्रों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 133.52 व 127.72 है, विचलन क्रमशः 79.59 व 96. 79 तथा ''टी'' का मान स्वतंत्रता स्तर 48 पर 2.18 है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– प्रतिपादित परिकल्पना–4 को अस्वीकार किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है अर्थात शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण में अन्तर व्याप्त है।

परिणाम की परिचर्चा :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि शहरी छात्रों का पारिवारिक पर्यावरण ग्रामीण छात्रों के पारिवारिक पर्यावरण की तुलना में अच्छा है। इसके मुख्य कारण शहरी पारिवार के सदस्यों में आधुनीकीकरण का प्रभाव होना, खुले विचारों का होना, सदस्यों द्वारा छात्रों से मित्रता पूर्वक व्यवहार करना, उनकी रूचियों व विचारों को स्वीकारना तथा शहरी छात्रों को ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक सुविधायें प्राप्त होना इत्यादि रहें हैं।

5- Ho_5 : **माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन **'t'** परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–05 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका–06 ग्रामीण छात्राओं एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर मध्यमान, विचलन, तथा 't' मान

	मध्यमान	विचलन	't' मान	.05 सार्थकता स्तर, df = 48 पर परिणाम
शहरी छात्रायें (25)	124.12	131.94		
ग्रामीण छात्रायें (25)	120.36	78.15	1.29	असार्थक

दण्डआरेख संख्या–05

शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमानों का दण्डआरेख

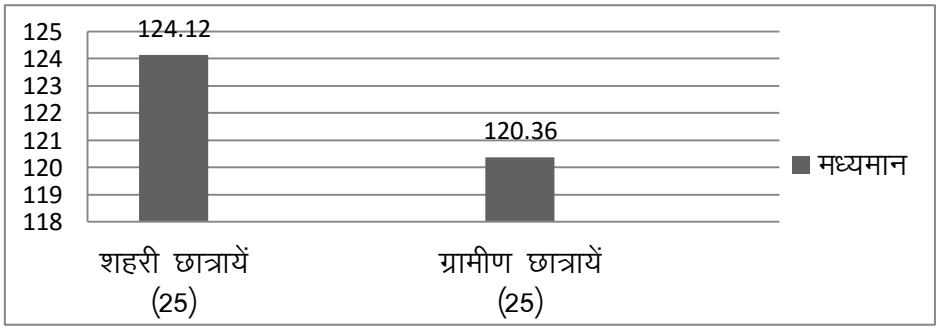

प्रदत्तों का विश्लेषण :– तालिका संख्या–06 में पारिवारिक पर्यावरण मापनी पर प्राप्त 25 शहरी छात्राओं एवं 25 ग्रामीण छात्राओं के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 124.12 व 120.36 है, विचलन क्रमशः 131.94 व 78.15 तथा ''टी'' का मान स्वतंत्रता स्तर 48 पर 1.29 है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर असार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– प्रतिपादित परिकल्पना–5 को स्वीकार किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमान में अन्तर सार्थक नहीं है। अर्थात शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण में महत्वपूर्ण अन्तर व्याप्त नहीं है।

परिणाम की परिचर्चा :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि शहरी व ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण समान है। शहरी छात्राओं व ग्रामीण छात्राओं के परिवार सदस्यों में उनके प्रति समान व्यवहार करते है।

निष्कर्ष :–

पारिवारिक पर्यावरण का लिंग के संदर्भ में अध्ययन करने पर पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर छात्र तथा छात्राओं के प्रति उनके पारिवार का व्यवहार समान रूप से प्रभावित नहीं करता है। परिवार

के सदस्य छात्राओं की तुलना में छात्रों के प्रति अधिक सकारात्मक एवं सहयोगात्मक व्यवहार रखते है। क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन करने पर पाया गया कि शहरी छात्रों के परिवार के सदस्य ग्रामीण छात्रों के परिवार के सदस्यों से अधिक सकारात्मक एवं सहयोगात्मक व्यवहार करते है तथा शहरी एवं ग्रामीण परिवारों में छात्राओं के प्रति व्यवहार समान है।

सुझाव :–

शोध के निष्कर्ष है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों के लिये पारिवारिक पर्यावरण अधिक सौहार्दपूर्ण है। संविधान में पुत्र–पुत्री दोनों को समानता का अधिकार प्राप्त है अतः पुत्र–पुत्री दोनों के विकास के लिये अभिभावकों को पुत्र–पुत्री दोनों को समान अवसर प्रदान करने चाहिये। अतः छात्राओं के लिए पारिवार के पर्यावरण को अधिक सौहार्दपूर्ण व गुणवत्तापूर्ण बनाने की आवश्यकता है, पारिवार के सदस्यों अथवा अभिभावकों को चाहिए कि वे ज्यादा से ज्यादा लडकियों के साथ समय व्यतीत करें, घर के माहौल में उनकों स्वतंत्रता महसूस करायें, उनकी बातों पर ध्यान दे, उनके साथ किसी भी प्रकार से भेदभाव एवं अनदेखी न करें, सकारात्मक दृष्टिकोण रखें, अधिक से अधिक सुविधायें प्रदान करें,रूचियो को प्रोत्साहित करें, उनके साथ विश्वास, सहयोग व संवाद बढायें।

सन्दर्भ सूची :

सिंह, अरूण कुमार. (2005). ***उच्च शिक्षा मनोविज्ञान.*** *पटना : मोतीलाल बनारसीदास.*

सिंह, राजेन्द्र प्रसाद एवं उपाध्याय, जितेन्द्र. (2006). ***विकासात्मक मनोविज्ञान.*** *पटना : मोतीलाल बनारसीदास.*

गुप्ता, एस0पी0. (2007). ***उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.*** *इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.*

गुप्ता, एस0पी0. (2007). ***सांख्यिकीय विधियॉ.*** *इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.*

लाल, रमन बिहारी. (2008). ***शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी.*** *मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो.*

सुलेखा. (2011). ***उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का उनके अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन.*** *एम0 फिल0. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी.*

सिंह, लाल एवं मंगल, अंशु. (2016). ***उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा – सामाजिक अध्ययन (उच्च प्राथमिक स्तर)*** *. आगरा : उपकार प्रकाशन.*

Shivane, Dilip. (2011). To study the family environment and mental health of the tribal andurban secondary students. Indian Streams Research Journal, 1(4).

Sathyabama, B. (2014). Family Environment and Mental Health of Adolescent Girls. International Journal of Humanities and Social Science Invention, 3(9).

Kaur, Malkeet. (2015). A study of relationship of family environment with Mental Health of adolescents of Sirsa District. International Journal of Applied Research, 1(9), 472-475.

Pardhasaradhi, Capt.V. and Goel , Varsha. (2015).To study the influence of family environment on social competence inchildren. International Journal of Applied And Pure Science and Agriculture, 1(12), 65-74.